Ramashadaksharamantra Upadeshah

रामषडक्षरमन्त्रोपदेशः

Document Information

Text title : Ramashadaksharamantra Upadeshah

File name : rAmaShaDakSharamantropadeshaH.itx

Category : raama, upadesha, advice, mantra

Location : doc_raama

Author : agastya, Hindi - Pandit Bhavanath Jha

Transliterated by : P. Sudarshana

Proofread by : P. Sudarshana

Acknowledge-Permission: Bhavnath Jha

Latest update : December 22, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

December 22, 2023

sanskritdocuments.org

Ramashadaksharamantra Upadeshah

रामषडक्षरमन्त्रोपदेशः

(अगस्त्य संहिता अध्याय ४)
श्रीविष्णुप्रति ब्रह्मोवाच ।
को वोपायो मनुष्याणां भक्तानां भक्तवत्सल ।
एतच्छरीरपातान्ते नः परं मुक्तिसिद्धये ॥ २७॥
हे भक्तवत्सल भगवान्! मनुष्यों और भक्तों के लिए ऐसा कौन सा उपाय है, जिससे हमें इस शरीर का अन्त होने पर मुक्ति मिले ।

इहाप्यस्माकमैश्वर्य्यं वै दुष्टेष्टार्थसिद्धये ।
एवमुक्तः स देवोऽस्मै भुक्तिमुक्तिप्रसिद्धये ॥ २८॥
स्वर्ग में भी हम देवों का ऐश्वर्य दोषपूर्ण इच्छित वस्तुओं की सिद्धि के लिए हैम् ।

किञ्चिद् विचार्य भगवान् षडक्षरमुपादिशत् ।
एकैकं वर्णविन्यासं क्रमाच्चाङ्गानि षट् पुनः ॥ २९॥
तद्विधिं विधये प्रादात् पञ्चमन्त्राक्षराणि च ।
रहस्यं देवदेवोऽपि तं मिथः समबोधयत् ॥ ३०॥
ऐसा कहने पर भगवान् ने कुछ सोचकर भोग और मोक्ष की सिद्धि के लिए छह अक्षरों वाले मन्त्र का उपदेश किया । हे मुनि! भगवान् ने भी उस षडक्षर मन्त्र एक एक कर वर्णविन्यास, क्रमशः न्यास आदि छह अङ्ग उसकी विधि तथा रहस्य बतला दिया तथा पञ्चाक्षर मन्त्र का भी उपदेश किया ।

तस्य तत्प्राप्तिमात्रेण तदानीमेव तत्फलम् ।
सर्वाधिपत्यं सर्वज्ञं भावोऽप्यस्याभवन् तदा ॥ ३१॥
ब्रह्मा ने भी ज्यों ही उसे प्राप्त किया, उस मन्त्र का फल तत्काल ही मिल गया । ब्रह्मा उसी क्षण सबके स्वामी बन गये तथा सारा ज्ञान उन्हें मिल गया ।

किं चास्य भगवत्त्वं च यदिष्टं तदभूदपि ।
सर्वेश्वरप्रसादेन तपसा किं न लभ्यते ॥ ३२॥

इतना ही नहीं, ब्रह्मा जो चाह रहे थे, वह उन्हें मिल गया; वे भगवान् भी हो गये । भला सबके स्वामी भगवान् श्रीराम की कृपा तथा तपस्या से क्या कुछ नहीं मिल जाता!

मुनीनामपि सर्वेषां तदा ब्रह्मा तदाज्ञया ।
उपादिदेश तत्सर्वं ततस्तु विष्णुरब्रवीत् ॥ ३३॥
तब भगवान् श्रीराम की आज्ञा से ब्रह्मा ने सभी मुनियों को इस मन्त्र का उपदेश किया । तब वे विष्णु बोले-

ऋषिर्भवास्य मन्त्रस्य त्वं ब्रह्मन् सर्वमन्त्रवित् ।
रामोऽहं देवता छन्दो गायत्री छन्दसां परा ॥ ३४॥
हे ब्रह्मा! आप मन्त्रों के ज्ञाता हैं, अतः इस मन्त्र के ऋषि आप भी हों । मैं "राम" इस मन्त्र का देवता हूँ तथा छन्दों में श्रेष्ठ गायत्री इस मन्त्र का छन्द होगा ।

मान्तो यान्तो भवेद्बीजं सर्वमाद्यफलप्रदम् ।
नमः शक्तितयोद्दिष्टो नमोऽन्तो मन्त्रनायकः ॥ ३५॥
मकार (राम्) एवं यकार (रामाय) से अन्त होनेवाले इसके बीज-मन्त्र हों तथा "नमः" इस मन्त्र की शक्ति हो । इस प्रकार "नमः" से अन्त होनेवाला यह मन्त्रों में नायक बने ।

रामाय मध्यमो ब्रह्मन् तस्मै सर्वं निवेदयेत् ।
इह भुक्तिश्च मुक्तिश्च देहान्ते सम्भविष्यति ॥ ३६॥
हे ब्रह्मा! इस मन्त्र के बीच में "रामाय" यह पद रहेगा और उसी राम को यह मन्त्र निवेदित करें । इससे संसार में भोग तथा देहान्त होने पर मोक्ष मिलेगा ।

यदन्यदप्यभीष्टं स्यात् तत्प्रसादात् प्रजायते ।
अनुतिष्ठादरेणैव निरन्तरमनन्यधीः ॥ ३७॥
इसके अतिरिक्त भी यदि कोई इच्छा हो, तो मुझ श्रीराम की कृपा से पूरी होगी । एकाग्रचित्त होकर लगातार इस मन्त्र का अनुष्ठान करें ।

चिरं मद्गतचित्तस्तु मामेवाराधयेच्चिरम् ।
मामेव मनसा ध्यायन् मामेवैष्यसि नान्यथा ॥ ३८॥
बहुत दिनों तक मुझमें मन लगाकर, मेरा ही ध्यान करते हुए जो मेरी उपासना करेङ्गे, वे मुझे ही पा लेङ्गे, इसमें सन्देह नहीं ।

तत्र तदेतद् विस्तार्य्य शिष्येभ्यो ब्रूहि गौरवम् ।
इत्युक्त्वान्तर्दधे देवस्तत्रैव कमलेक्षणः ॥ ३९॥
हे ब्रह्मा! "संसार में इसी का विस्तार कर अपने शिष्यों से इस मन्त्र की गरिमा का बखान करें।" ऐसा कहकर कमलनयन भगवान् श्रीराम वहीं अन्तर्धान हो गये ।

प्रजापतिश्च भगवान् मुनिभिः सार्द्धमन्वहम् ।
अन्वतिष्ठद् विधानेन निक्षिप्याज्ञां सिरस्यथ ॥ ४० ॥
तब भगवान् प्रजापति ब्रह्मा ने श्रीराम की आज्ञा सिर पर चढ़ाकर मुनियों के साथ विधानपूर्वक इस मन्त्र का अनुष्ठान किया ।

इति रामषडक्षरमन्त्रोपदेशः सम्पूर्णः ।
इत्यगस्त्यसंहितायां परमरहस्ये ब्रह्मणा षडक्षरमन्त्रग्रहणं नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥

रं रामाय नमः ।
ॐ रामाय नमः ।

Encoded and proofread by P. Sudarshana
Hindi translation by Pandit Bhavanath Jha

Ramashadaksharamantra Upadeshah
pdf was typeset on December 22, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*